2012 April

MARCH Week-11

16 Friday

हिन्दी विभाग
डॉ गीता कुमारी

BA III Paper
विषय - काव्यशास्त्र

11.11.2020
11.40 to 12.30 pm

रस के अवयव

संचारी भाव, स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव

(1) स्थायी भाव - जो भाव हृदय में सदैव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं, किन्तु अनुकूल कारण पाकर उद्बुद्ध होते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहा जाता है। इनकी संख्या नौ मानी गई है। रति, उत्साह, क्रोध, जुगुप्सा, विस्मय, निर्वेद, हास, भय, शोक स्थायी भाव हैं। प्रत्येक स्थायी भाव से संबंधित एक रस होता है।

स्थायी भाव अनुकूल आलम्बन तथा उद्दीपन रूप उद्दीपन सामग्री के संयोग से रस रूप में अभिव्यक्त होते हैं। स्थायी भाव ऐसा सागर है जो सभी विरोधी अविरोधी भावों के आत्मसात करके अपने अनुरूप बना लेता है।

रस और उनके स्थायी भाव

रस का नाम	स्थायी भाव
1. शृंगार	रति
वीर	उत्साह
रौद्र	क्रोध

MARCH
Week-11

17 Saturday
077-289

वीभत्स	जुगुप्सा (घृणा)
अद्भुत	विस्मय
शान्त	निर्वेद
हास्य	हास
भयानक	भय
करुण	शोक

इनके अतिरिक्त दो रसों की चर्चा और होती है।

18 Sunday
078-288

वात्सल्य — सन्तान विषयक रति
भक्ति — भगवद् विषयक रति

स्थायी भावों की संख्या नौ ही मानी गई है, अतः मूल 'नवरस' ही माने गए हैं। रति के तीन भेद माने जा सकते हैं - दाम्पत्य रति, वात्सल्य रति, भक्ति सम्बन्धी रति। इन तीनों से क्रमशः शृंगार, वात्सल्य एवं भक्ति रस की निष्पत्ति है शृंगार रस को रसराज माना जाता है।

Nothing would be done at all
if a man waited will be could do it so well that no one could find fault with it.

Scanned with CamScanner

रति

रति का स्थायी प्रणय। स्त्री और पुरुष की परस्पर प्रीति को रति कहते हैं। गुरु देव पुत्रादि में जो प्रीति होती है उसे शास्त्रकार केवल 'भाव' कहते हैं।

उत्साह

एक शूरमा को देखकर दूसरे के दिल में होने वाले ओज को उत्साह कहते हैं।

क्रोध

अपमानादि होने पर उत्पन्न चित्त विकार को क्रोध कहते हैं।

घृणा या जुगुप्सा

किसी घृणास्पद पदार्थ के अवलोकन अथवा श्रवण के कारण से होने वाले भाव को घृणा कहते हैं।

विस्मय

अलौकिक या अद्भुत वस्तु को देखकर अथवा सुनकर जहाँ आश्चर्य का भाव उत्पन्न हो, वहाँ विस्मय भाव होता है।

20 Tuesday

080-286

निर्वेद

जहाँ ज्ञान के द्वारा वीतरागता की भावना उत्पन्न होती है उस विरतिभाव को निर्वेद कहते है।

हास

हँसी के भाव को हास कहते है।

भय

भयंकर पदार्थ, आकृति या चेष्टाओं से देखकर डर जाने को भय कहते है।

शोक

जब कुछ अनिष्ट हो जाने पर चित्त में दुःख की उत्पत्ति होती है उसे शोक कहते है।

स्नेह

पुत्र, शिष्यादि पर जो स्वाभाविक प्रेम होता है उसे स्नेह कहते है।

He alone is an acute observer,
who can observe minutely without being observed.

Scanned with CamScanner